लास्ट लव

हीना जजवानी

工場 kojo press
In Pursuit of Quality

लास्ट लव

2022
कॉपीराइट © हीना जजवानी

सभी अधिकार सुरक्षित।

इस प्रकाशन का कोई हिस्सा पुनः पेश नहीं किया जा सकता है
एक पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत, न ही किसी भी रूप में
प्रेषित और न ही किसी भी तरह से, प्रकाशक से पूर्व लिखित
अनुमति के बिना और न ही कवर के किसी भी रूप में
परिचालित किया जा सकता है।

लेखक और प्रकाशक विशेष रूप से किसी भी दायित्व, हानि
या जोखिम, व्यक्तिगत या अन्यथा, जो इस पुस्तक की किसी भी
सामग्री के उपयोग के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से
परिणामो की सभी जिम्मेदारी को अस्वीकार करते हैं।

ISBN: 978-81-95456-30-7

प्रकाशक
कार्तिक राज कुशवाह

工場 kojo PRESS
IN PURSUIT OF QUALITY

4760/61, ''साईं सरोवर'', दूसरी मंजिल
23, अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली – 110002
kojopress88@gmail.com
www.standardsmedia.com
Ph.: 011-23264946, 43586946

टाइप सेट एवं कवर डिजाइन
कमल कुमार

बेवफ़ाई तेरी उसे दफ़न ना कर पाई,

आश्चर्य है !

जुदाई भी तेरी उसका कफ़न ना बन पाई.....

- हीना जजवानी

डिस्क्लेमर

यह कहानी एक सत्य घटना से प्रेरित कहानी है | कहानी में उल्लेखित किये गये सभी स्थान एवं पात्रों के नाम बदल दिए गये हैं, जिनका किसी वास्तविक व्यक्ति जीवित या मृत से, जाति या धर्म से, विषय, वस्तु या व्यापार से कोई सम्बन्ध नहीं है | किसी की भी भावनाओं को चोंट पहुँचाने का या किसी की मानहानि करने का मेरा कोई मकसद नहीं है | वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, से कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है, जिसके लिये लेखिका एवं प्रकाशक की कोई जवाबदेही नहीं होगी |

आभार

एक फार्मासिस्ट होते हुए नोवेल लिखना एक बेहतरीन अनुभव रहा मेरे लिए | हाँ ! ये सच है कि नोवेल लिखने से पहले मेरे मन रूपी सागर में एक ओर जहाँ उत्सुकता की लहर उठ रही थी, तो वहीँ दूसरी ओर एक ऊहापोह की लहर भी उछालें मार रही थी | " लास्ट लव " जैसी प्रेम कहानी के लेखन को सार्थक बनाना और उसे आप तक पहुँचाना एक नोवेल के रूप में, मेरे अकेले का काम नहीं था, मैं शुक्रगुजार हूँ उन सभी का जिन्होनें इसे पूरा करने और आप तक पहुँचाने में, मेरी पुरजोर मदद की | मैं शुक्रिया अदा करना चाहूंगी -

- मेरे सद्गुरु भगवान् का, जिनके सत्य आशीर्वाद और करुणा रूपी कृपा से ये प्रेम कहानी मैं लिख पाई | उसके बाद मैं धन्यवाद् कहना चाहूंगी मेरे माँ पापा को, परमात्मा को, उनके आशीर्वाद के लिए |
- मेरे bestfriends बिन्नी अमरनानी और दीपक अमरनानी का, बिन्नी अमरनानी जोकि मेरे नोवेल की पहली पाठक हैं, न सिर्फ पाठक बल्कि मार्गदर्शक भी | दीपक अमरनानी, जिन्होनें मेरा मार्गदर्शन करने के साथ साथ मेरे नोवेल को सराहा भी |
- मिलन सांखला, कार्तिक गुप्ता, जितेन्द्र पाटीदार (लेखक), विशाल सावलानी और मेरे शिक्षकों का |
- मेरे कॉलेज के साथियों का |

- विशेष धन्यवाद मेरे भाई मोहन ढलवानी (Mouyie), मेरे **नोवेल के** प्रकाशक कार्तिक राज कुशवाह एवं उन्हीं की प्रकाशन संस्था kojopress का, एवं मेरे पाठकों का |

सभी लड़कों एवं लड़कियों को समर्पित.....

साल 2020, वो साल जब दुनिया के कईं देशों में महामारी पैर पसार चुकी थी, और अब वो महामारी तैयार थी हमारे देश भारत में अपने रंग दिखाने के लिए | ऐसे में 24 मार्च को पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा माननीय प्रधानमंत्री महोदय जी द्वारा की गयी | फ़िलहाल कुछ गिनती के दिनों के लिए ये घोषणा की गयी, सभी को अपने अपने घरों में कैदी की भांति बंद कर दिया गया, कुछ आवश्यक सेवाओं में काम करने वाले लोगों को छोड़कर | उन्हीं लोगों में से एक मैं भी थी, जिसे ये स्वतंत्रता हासिल थी, सेवा करने के लिए | लेकिन ! जब इस लॉकडाउन की घोषणा हुई, तब हर कोई अपने घर के अलावा अनेकों सवालों के घेरे में घिर चुका था, कि ये महामारी क्या रंग दिखाएगी ? मैं नहीं जानती कि इस महामारी ने किसको कौनसे और कितने रंग दिखाए ? इतना जानती हूँ कि इस महामारी ने मुझे खुद (महामारी) का कोई रंग भले नहीं दिखाया, लेकिन मुझे लम्बे समय से ये दावा करने वाले लोगों का कि - "तुम आवाज़ तो दो हमारी जान हाजिर है, वक़्त आने पर हम नहीं काम आयेंगे तो कौन आएगा, हमारी तो खासियत है साथ निभाने की |" इसी तरह के अनेकों लोगों के रंग मैंने भलीभांति पहचाने |

जब ये महामारी हमारे देश में, न सिर्फ हमारे देश में, बल्कि हमारे शहर, गाँव, मोहल्ले, गली, और घर में पैर पसार चुकी थी, तब चिकित्सा विभाग के बहुत से लोगों को इस महामारी के साथ एक और परेशानी का सामना करना पड़ा था, वो थी समाज के लोगों द्वारा खड़ी की गयी परेशानी | अधिकतर लोग उनके घरों में रहने वाले किरायेदारों और पड़ोस में रहने वाले चिकित्साकर्मी को देखते ही दूरी बनाने लग गये, जैसे वो कोई चिकित्सक या चिकित्सा विभाग का अन्य कोई स्टाफ न होके खुद ही महामारी है | लोग कॉलोनी में उन्हें आता देख ही भाग जाते थे, उनमें से कोई किसी के पास कुछ दूरी पर जाके खड़ा हो जाता था तो अपने बच्चों को बाहर आने से मना कर देते थे, यदि कोई पांच छः मंजिला इमारत में सबसे आखिरी की मंजिल पर रहने वाला चिकित्सा विभाग का कोई कर्मचारी होता, और उसके अस्पताल

से घर आने का समय होता तो उसी ईमारत में रहने वाले लोग लिफ्ट बंद कर देते थे, ताकि उन लोगों को इस चिकित्साकर्मी के लिफ्ट में जाने से महामारी का खतरा न जकड़ जाए | वो बेचारा चिकित्साकर्मी सीढियों से चढ़कर जाता और उतरता था, जब तक कि उन लोगों पर कोई कार्यवाही नहीं हुई | इसी तरह की ना जाने कितनी ही परेशानियों का सामना कईयों को करना पड़ा था उस समय |

मेरे हिस्से में ये परेशानी कुछ इस तरह आई थी -

एक शहर से दुसरे शहर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की कोविड जांच शुरू कर दी गयी थी, मेरी ड्यूटी भी उन्हीं लोगों की स्क्रीनिंग कार्य में लगी हुई थी, दिनभर इधर से उधर गाड़ी लेके दौड़ रहे थे हम | जब ड्यूटी का समय पूरा होता और कुछ देर के लिए मैं कहीं पानी पीने जाती या आराम करने जाती तो, मुझे देखते ही मेरे स्टाफ के कुछ लोग ही वहां से दूर चले जाते, या फिर बिना मास्क के समूह में बेठे लोग मुझे देख मास्क लगा देते | मैं यदि किसी जगह कुर्सी लगाकर बैठती, तो वहां मोजूद लोग उठकर कहीं दूर चले जाते, जिनके साथ मिलजुल कर काम किया उनमें से बहुतों ने घृणा और आडम्बर का वो विष उगला जिसका असर अबतक कम नहीं हुआ, अस्पताल के ही किसी व्यक्ति से एक दिन खाने की व्यवस्था न होने पर जब ज़िक्र किया, तो उसने कह दिया कि खुद की व्यवस्था तो तुम खुद ही देख लो अब, ये वो समय था जब सारा बाजार बंद हो चूका था, और कोई समाजसेवी अभी भोजन की व्यवस्था के लिए आगे नहीं आया था | एक दिन तो स्टाफ के कुछ लोग जिनकी ड्यूटी कोविड से सम्बन्धित किसी भी विषय में नहीं लगी थी, चाय नाश्ते की व्यवस्था करके बेठे ही थे, कि मेरा उनके कक्ष के करीब से गुजरना हुआ, मुझे देखते ही उन्होंने दरवाज़े को इतनी जोर से बंद किया, जैसे मैं नहीं महामारी उनके खान पान में रम जाएगी | ये वही लोग थे, जिनके लिए अक्सर मैंने खाने में जब भी कुछ नया बनाया उनको उस स्वाद से रूबरू करवाया था |

यदि मैं किसी से कुछ मदद के लिए कहती तो वो भी साफ़ मना कर देता था, ऐसा नहीं है कि मेरा सारा स्टाफ ही इन सबमे शामिल था, कुछ लोग थे जो मुझे काम आये थे, लेकिन जो लोग काम नहीं आये, जो लोग दूर भाग रहे थे, जो लोग मुझे घृणा से देख रहे थे, ये सब वही लोग थे जिनके दावों के बारे में मैंने अभी कुछ देर पहले ही ज़िक्र किया है | वो सब सिर्फ मेरे स्टाफ के ही नहीं थे जिन्होनें ये सब किया, उससे (अस्पताल) बाहर की दुनिया में रहने वाले भी कुछ लोग थे, जिनके लिए हर वक़्त हाजिरजवाब थी मैं, जिनके साथ ना जाने कितना समय दोस्ती के वादे करते और निभाते वक़्त गुज़ारा था मैंने | कुछ तो मेरे जीवन के सबसे ख़ास दोस्तों में से एक थे, उन्होंने मेरे यकायक बीमार हो जाने पर मुझे जब drip लग रही थी, तब भी अकेला छोड़ दिया था, ये सोचकर कि कहीं मैं इस महामारी का शिकार तो नहीं हो गयी | कुछ दोस्तों ने ये भी नहीं जानना चाहा कि मैं ठीक हुई भी या नहीं ?

हंसी आती है आज, उनके ख़यालों पर | सच कहूँ तो शिकार तो मैं हुई ही थी, लेकिन महामारी का नहीं, अपने अपनों के द्वारा दी जाने वाली धोखे, घृणा, आडम्बर रूपी मार का | खुद को इन सबके द्वारा दी जाने वाली मार जब असहनीय हुई तब मैंने सोचा कि जिन लोगों के लिए अपने जीवन का इतना समय मैंने लगा दिया था, आज वही लोग मुझसे किस तरह पेश आ रहे हैं, क्या ऐसे लोगों के लिए ही हमें ये जीवन मिलता है ? यदि हाँ ! तो क्या जरूरत है इस जीवन की, जहाँ इस तरह के लोगों के बीच हमें जीवन जीना होता है | मैंने उहापोह में निर्णय लिया कि इस जीवन का जब कोई महत्व नहीं हैं, तो क्यों इसे जिया जाए ? जब ये निर्णय मैंने लिया तब मैं मेरी ड्यूटी पर तैनात थी और ड्यूटी पूरी होने के बाद जब मैं अपने कमरे में बेठी ये सोच रही थी कि अपने अपनों के द्वारा दी हुई चोंट ने मुझे आज ये सोचने पर मजबूर कर दिया है, कितनी घातक होती है ये मार, कि इसके आगे जीवन भी शुन्य की भांति दिखाई देने लगता है | आज जब मेरा ये हाल हुआ, अब जब मैं ये समझ पाई हूँ, तब मुझे तुम्हारी याद आई रिधिमा.....

लास्ट लव

कहतें है पहला प्यार ताउम्र याद रहता है, फिर चाहे वो ! बचपन में अपने साथ खेल रहे किसी साथी से हो जाए, चाहे वो स्कूल, कॉलेज में अपने सहपाठी या सीनियर से हो, या फिर जॉब में अपने सहकर्मी से | अब भले वो प्यार क्षणभर का हो, जिसे मॉडर्न शब्दों में कहें तो "क्रश" हो या फिर आकर्षण हो | लेकिन, फर्स्ट लव तो उसे ही कहा जाता है |

तो फिर ! लास्ट लव का क्या ?

जानना चाहेंगे लास्ट लव क्या होता है ?

तो आइये, स्वागत है आपका लास्ट लव में.....

1.

ट्रिंग ट्रिंग, ट्रिंग ट्रिंग

"रिधिमा.....! बेटा देखना तो किसका फ़ोन है ?" रसोईघर से मधु ने रिधिमा को आवाज़ लगाते हुए कहा |

आलू का परांठा हाथ में लेके रिधिमा फ़ोन की तरफ बढ़ी, फ़ोन उठाते ही परांठा खाना शुरू करती हुई रिधिमा बोली - "हेलो, जी मासी, कैसी है आप ? घर पर सब कैसे हैं ? हाँ, एग्ज़ाम का रिजल्ट तो आ गया, पर मेरा सिलेक्शन नहीं हो सका पीएमटी (प्री मेडिकल टेस्ट) में |

फ़ोन के दूसरी ओर से रिधिमा की मासी ने जान लिया रिधिमा कुछ खाते हुए बात कर रही है, उन्होनें खीजते हुए कहा – तुमने फिर खाते खाते बात करना शुरू कर दिया, मधु कहाँ है ? उसे फ़ोन दो, बाकि बात मैं उससे कर लूंगी |

"हाँ ? हाँ ! एक मिनट ! माँ, रमा मासी आपसे बात करना चाहते हैं |" रिधिमा ने अपनी माँ को आवाज़ लगाते हुए कहा, और मन ही मन कहने लगी – "एक तो पहले ही लाइट बंद होने की वजह से इतनी गर्मी है, ऊपर से मासी ने गरम गरम बातें सुना दी |"

"हाँ, आती हूँ |" रसोई का काम छोड़कर पसीने में तरबतर रिधिमा की माँ हॉल में आ पहुंची और रिधिमा को घर के बाकि सदस्यों के लिए

नाश्ता बनाने को कहा | रिधिमा ने पहले हाथ में बचा हुआ परांठा खाया और फिर उसने रसोईघर का रुख किया |

मक्खन से सना रिसीवर हाथ में थामते ही मधु ने बुदबुदाते हुए कहा – "ये लड़की भी ना, पता नहीं कब सुधरेगी, परांठे पर मक्खन इसे देती हूँ खाने के लिए और ये है कि टेबल, कुर्सी, सबको खिलाते खिलाते, इस रिसीवर को भी खिला गयी |" रिधिमा की माँ सोच ही रही थी कि, फ़ोन के दूसरी ओर से रमा की आवाज़ आई – "हेलो....., कोई सुन रहा है ?"

रिधिमा की माँ को भान आया अपनी बहन से बात करने का और उन्होनें जवाब देते हुए कहा - "हेलो, हाँ रमा, कैसी हो तुम ?"

"मैं ठीक हूँ, तुम कैसी हो मधु ?" रमा ने कहा |

"मैं भी ठीक हूँ |आज इतनी जल्दी फ़ोन कैसे लगाया तुमने, वैसे तो तुम इस समय बहुत व्यस्त रहती हो ? सब कैसे है घर पर ?" मधु ने सबकी कुशलता पूछते हुए कहा |

"यहाँ सब ठीक हैं, मुझे कल पता चला कि रिधिमा की एग्ज़ाम के नतीजे आ चुके हैं, इसलिए इतनी जल्दी फ़ोन लगा लिया | रिधिमा ने मुझे बताया उसकी एग्ज़ाम के बारे में, वैसे ! अब तो तुम्हारे मोहल्ले और गाँव वालों को तूल मिल जायेगा कि, डॉक्टरी की पढाई में सिलेक्शन नहीं हुआ तो, अब कॉलेज पढ़ाने से क्या फायदा ? हम सिंधियों में तो लड़कियां बस जैसे तैसे पढ़ लें और घर के काम सीख जाए, तो सब उसकी शादी कराने में लग जाते हैं |" रमा ने रिधिमा के भविष्य को लेके चिंता जताते हुए तंज कसा |

मधु ने पसीना पोंछते हुए कहा – "तुम ठीक कह रही हो, लेकिन ! मेरी तो बहुत इच्छा है मेरी बेटी को आगे पढ़ाने की | मैं भी रिधिमा की पढाई के बारे में ही सोच रही हूँ कल से |"

"एक काम करो ! रिधिमा को मेरे यहाँ भेज दो, मेरी बेटी भी एमबीबीएस (बैचलर ऑफ़ मेडिसिन एंड बेचलर ऑफ़ सर्जरी) करना चाहती है, उसका भी इस बार सिलेक्शन नहीं हुआ, हो सकता है, नेक्स्ट एटेम्पट में क्लियर हो जाए | तब तक फार्मेसी का एंट्रेंस एग्ज़ाम दे रही है, ताकि साल बेकार न जाए, और साथ ही साथ कोचिंग भी जारी रहेगी | क्यूँ ना, रिधिमा भी यही एग्ज़ाम दे दे | वैसे भी यहाँ पास ही के शहर में अच्छा सा कॉलेज है, भगवान ने चाहा तो वहीँ दोनों का सिलेक्शन हो जायेगा |" रमा ने मधु की मदद करने के लिए विकल्प सुझाया |

"हाँ, ये तो बहुत अच्छी बात है, मैं रिधिमा के पापा से बात करके तुम्हें कल बताती हूँ, अच्छा ठीक है कल बात करेंगे अब |" मधु ने रमा की बात पर सहमती जताई |

"ठीक है, तुम विशाल जी से पूछ कर मुझे बता देना |" रमा ने ऐसा कहकर फ़ोन रख दिया |

रात को रिधिमा के पापा के घर आने के बाद, घर के सभी सदस्यों ने खाना खाया और थोड़ी देर बाद सभी अपने अपने कमरे में सोने चले गए | तभी, मधु ने अपनी बहन रमा द्वारा बताये गए विकल्प के बारे में, रिधिमा के पापा को विस्तार से बताया और कहा - "इस तरह से रमा ने मुझे रिधिमा की आगे की पढाई के लिए कहा है, अगर आप हाँ कहे तो..... ?" मधु ने विशाल से कहा और रजामंदी के लिए उत्सुकता से अपने पति की ओर देखने लगी |

"कोई दिक्कत नहीं है, घर पे सभी से कह देना कि, रिधिमा उसकी मासी के यहाँ घूमने जा रही है, उसके जाने के बाद हम अपने बड़ों को बता देंगे कि, वो वहां आगे की पढाई पूरी करने गयी है |" विशाल ने मधु की बात से सहमत होते हुए कहा |

"ठीक है ! मैं अभी रिधिमा को बता देती हूँ, एक दो दिन में ही उसे भेज देंगे |" मधु ने मुस्कुराते हुए कहा |

विशाल ने मधु को रोकना चाहा ये कहकर कि इतनी रात को रिधिमा की नींद ख़राब ना करे, लेकिन ख़ुशी ख़ुशी में मधु से सब्र नहीं हुआ और वो जा पहुंची रिधिमा के कमरे में |

और रिधिमा की माँ ने उसे आवाज़ लगायी - "रिधिमा ! रिधिमा !"

"क्या हुआ माँ ? क्या काम है ?" रिधिमा ने बिस्तर में लेटे लेटे कहा |

मधु ने रिधिमा को झट से उठाया और मुस्कुराते हुए कहा - "अरे बेटा ! जल्दी ही तुम्हें अपनी मासी के यहाँ जाना है | आगे की पढाई वहीँ पूरी करनी होगी तुम्हें |"

"लेकिन क्यूँ माँ ? मैं यहाँ भी तो पढ़ सकती हूँ न ?" रिधिमा ने हैरान होके पूछा |

"नहीं बेटा ! तुम्हारा पीएमटी में सिलेक्शन हुआ नहीं है, और तुम तो जानती हो, न सिर्फ हमारे परिवार में से, बल्कि इस मोहल्ले में से भी मेडिकल फील्ड की तैयारी तुम ही कर रही थी | अब यहाँ सब यही कहने लगेंगे कि, आगे मेडिकल फील्ड के लिए कोशिश न करो, लेकिन ! तुम्हारा इन्ट्रेस्ट इसी फील्ड में है, और अब आगे बढ़ने के लिए तुम्हें मासी के तालुका में जाके ही पढाई पूरी करनी चाहिए |"

बस इसी तरह रिधिमा की माँ ने उसे वो सब बातें बताई, जो रिधिमा की मासी से उसकी पढाई के विषय में हुई, और रिधिमा ने कहा - "ठीक है माँ, लेकिन माँ ! मासी का तालुका भी तो छोटा है, क्या वहां कोई नहीं कहेगा, कि मैं अपना घर छोड़ कर उस तालुका में क्यूँ गयी, और क्यूँ मैं मासी के यहाँ आके पढाई पूरी कर रही हूँ ?"

"तुम उस बात की परवाह मत करो, क्यूंकि तुम्हारी मासी है न, वो सब कुछ अच्छे से संभाल लेंगी, तुम तो जानती हो तुम्हारी मासी के आगे किसी की एक नहीं चलती |" मधु ने रमा की समझदारी की तारीफ करते हुए कहा |

रिधिमा ने सोचा - "खेर ! मुझे क्या है, मुझे मेरी पढाई से मतलब है, वो चाहे जहाँ भी हो |"

रिधिमा भी अब तैयारी में लग गयी मासी के घर जाने के लिए | कुछ दिनों बाद, जिस दिन रिधिमा को मासी के घर जाने के लिए निकलना था, उसके एक दिन पहले शाम को रिधिमा की माँ ने बहुत सी मिठाइयाँ और तरह तरह के खान पान अपनी बहन को भेजने के लिए बाजार से मंगवा दिए, और रात होते ही रिधिमा की माँ ये सारा सामान पैक करने में लगी हुई थी | जब रिधिमा कपड़ों से भरा उसका बैग तैयार कर रही थी, तभी रिधिमा की माँ उसके कमरे में आ पहुंची और अपनी बहन के लिए जो सामान पैक किया था उन्होनें, वो रिधिमा को दिया उसके साथ ले जाने के लिए |

रिधिमा चौंक गयी, इतना बड़ा बैग जो सिर्फ मिठाइयों और खाने पीने की चीजों जैसे – कचोरा, बालूशाही, पेड़े, रसगुल्ले, सेवईयाँ, खोराक (सिन्धी समाज में बनने वाला मीठा व्यंजन), पापड़, शरबत, चॉकलेट और भी पता नहीं क्या क्या....., उन सभी सामानों से लगभग वमन करती हुई स्थिति में पहुँच चुके बैग को देखकर रिधिमा ने अपनी माँ से कहा - "माँ, मासी अभी दो तीन महीने पहले ही तो आये थे हमारे यहाँ, तब सामान देखकर यही लग रहा था जैसे तुमने पूरा नसीराबाद ही दे दिया था उन्हें | अभी भी कोई कमी बाकी है क्या ? ये तो सोचो माँ, इतना सारा सामान मैं कैसे संभालुंगी ?"

"कहाँ इतना सारा है ? थोडा ही तो है |" रिधिमा की माँ ने मासूमियत से मुस्कुराते हुए कहा |

रिधिमा ने सोचा - "माँ ठीक ही तो कह रही है, कोई भी महिला अपने पीहर वालों को कुछ भी भेजें, उन्हें कम ही तो लगता है |"

"और सुनो ! तुम वहां धमाल मस्ती मत करने लग जाना, पढाई करना मन लगा कर |" ये आई नसीहत, रिधिमा की माँ की ओर से, जो हर माँ अपनी संतान को, किसी और जगह पर जाने से पहले देती है |

रिधिमा मुस्कुरा दी, और हाँ भर दी |

पता नहीं क्यों ? हर माँ यही क्यों सोचती है कि, उनके कहने मात्र से उनकी औलादें पढाई में मन लगा देंगी | अब भला रिधिमा अपना स्वाभाविक व्यहवार कहाँ छोड़ने वाली थी |

और अगले ही दिन रिधिमा चल पड़ी अपनी मासी के यहाँ | रिधिमा सुबह पांच बजे उठकर नहा धोकर तैयार हो गयी, ताकि समय से चाय नाश्ता करके उसके गाँव नसीराबाद रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़ सके, रिधिमा को उसके माँ पापा ने ट्रेन में बैठाया और शाम को चार बजे ट्रेन पहुँचेगी उसके मुकाम पर, ऐसा कहकर उसके माँ पापा ने उसे रवाना किया | अब वो दौर ही ऐसा था, ट्रेन चलती भी थी तो, हर एक छोटे छोटे स्टेशन का भरपूर मन से दर्शन करवाते हुए |

रिधिमा तो भई अपने रिज़र्व बर्थ पर सो गयी, पैर पसार कर | दोपहर में उसकी नींद खुली, उसने बाहर देखा तो ट्रेन, भीलवाडा स्टेशन पर रुकी हुई थी | उसने नीचे उतर कर वेफर, चाय, और २-३ समोसे लिए, और चढ़ गयी अपने कोच में | मजे से नाश्ता करके रिधिमा फिर से पसर गयी अपने बर्थ पे, और ट्रेन चल पड़ी |

रिधिमा बर्थ पर लेटे लेटे बाहर के नज़ारों का लुत्फ़ उठाने लग गयी, और उसे फिर झपकी लग गयी, आंख खुली तो उसने घडी में समय देखा, साढ़े तीन बज रहा था | उसने उसके बर्थ पर लेटे लेटे सामने वाले बर्थ पर बेठे